18-09-2012

कीट विज्ञान से पैदा किया स्वयं का कीट ज्ञान

निडाना गांव में खाप पंचायत की ओर से 13वीं खेत पाठशाला का आयोजन

भास्कर न्यूज | जुलाना

देश में लगातार कृषि क्षेत्र में नई-नई तकनीक आ रही हैं। इनका इजाद व्यापार को ध्यान में रखकर किया गया है। लेकिन इन तकनीकों की जगह किसानों ने कीट विज्ञान को अपनाकर स्वयं का कीटी पैदा किया है। यह एक सराहनीय और फायदेमंद कदम है। यह बात कृषि अधिकारी डॉ. सुरेंद्र दलाल ने मंगलवार को निडाना गांव की किसान खेत पाठशाला में खाप पंचायत की 13वीं बैठक में कही। अध्यक्षता सर्वखाप पंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने की।

सर्वेक्षण कर बताए अनुभव

इससे पहले खाप खेत पाठशाला की शुरुआत फसल में कीट सर्वेक्षण से की गई। कीट कमांडो किसानों ने कीटों का सर्वेक्षण कर खाप प्रतिनिधियों के सामने फसल में मौजूद कीटों का आंकड़ा रखा। इस दौरान आसपास के गांवों से आए किसानों ने कीट बहीखाते में अपने-अपने कपास के खेत से तैयार किए गए फल, फूल व बोकी का आंकड़ा भी दर्ज कराया।

किसानों द्वारा दर्ज कराए गए आंकड़े में फल की प्रति पौधा औसत 60 से 80, फूल की 1 से 3 तथा बोकी की 7 से 12 की औसत आई। ईंटलकलां से आए किसान चतर सिंह ने बताया कि इस समय पौधे को फूल व बोकी की बजाए फल की ज्यादा चिंता रहती है, ताकि उसकी वंशवृद्धि हो सके।

किसान अजीत ने बताया कि जिंक, यूरिया व डीएपी के छिड़काव का प्रभाव चार घंटे में ही नजर आता है, जबकि जमीन में डाले गए खाद का प्रभाव तीन से चार दिन बाद नजर आता है। खेत पाठशाला में कुंडू खाप के प्रधान सुभाष कुंडू, देवव्रत ढांडा, बागवानी विभाग से डीएचओ डॉ. बलजीत भ्याणा व पेहवा से आए किसान शीतल राम मौजूद रहे।

निडाना गांव में खाप खेत पाठशाला में कीटों के बारे में जानकारी देता एक किसान।

कैमरे में किया कैद

इस दौरान लोकसभा चैनल दिल्ली की टीम ने मंगलवार को किसान खेत पाठशाला में पहुंचकर किसानों के अनुभव अपने कैमरे में कैद किए।

11-09-2012

कीटों को पहचानने की जरूरत

खेतीबाड़ी खेत पाठशाला में महिलाओं ने कीटों को लेकर सांझा किए विचार

भास्कर न्यूज | जुलाना

किसान कपास के खेत में पत्तों को कटा देखकर घबरा जाता है। वह कीटनाशकों के माध्यम से कीटों को कंट्रोल करने का प्रयास करता है। किसानों की इसी जद्दोजहद में शाकाहारी कीटों के साथ-साथ मांसाहारी कीट भी मारे जाते हैं। इससे फसल पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें कीटों को कंट्रोल करने की नहीं अपितु उनकी पहचान करने की जरूरत है। यह कहना था ललित खेड़ा गांव में लगी महिला खेत पाठशाला में जागरूक किसान महिलाओं का। मास्टर ट्रेनर अंग्रेजो ने कहा कि कपास की फसल में इस समय किसी भी प्रकार के कीटनाशक रखने की जरूरत नहीं है।

जुलाना. कपास की फसल में कीटों का निरीक्षण करती महिलाएं।

कीटों का किया निरीक्षण : महिला खेत पाठशाला में ललित खेड़ा, निडाना व निडानी गांव की महिलाओं ने भाग लिया। पाठशाला की शुरुआत महिलाओं ने कपास कीट सर्वेक्षण के साथ की। महिलाओं ने इस दौरान कपास की फसल में लगभग एक घंटे तक कीटों का निरीक्षण किया। महिलाओं ने कपास की फसल में मौजूद पर्ण भक्षी कीटों व मांसाहारी कीटों के क्रियाकलापों के बारे में भी अपने अनुभव पाठशाला में रखे।

05-09-2012

थाली को जहर मुक्त बनाने का प्रयास

खेत पाठशला में कई खापों के प्रतिनिधियों ने लिया भाग

भास्कर न्यूज | जुलाना

निडाना के किसान हर व्यक्ति की थाली के जहर से मुक्त बनाने में लगे हुए हैं। किसानों का यह प्रयास काफी सराहनीय है। आने वाले दिनों में उन्हें इस कार्य के लिए याद किया जाएगा। यह बात विश्व विख्यात खाद्य एवं कृषि विशेषज्ञ डा. देवेंद्र शर्मा ने मंगलवार को निडाना में आयोजित किसान खाप पंचायत में किसान-कीट विवाद पर किसानों के साथ चर्चा करते हुए कही। इस किसान खाप पंचायत की अध्यक्षता कुलदीप सिह ढांडा ने की।

किसान फंसा चक्रव्यूह में

कृषि विशेषज्ञ डा. शर्मा ने कहा कि किसानों की हालत आज पांडू पुत्र अभिमन्यू की तरह है। जिसे चं व्यूह में प्रवेश करना तो आता था, लेकिन उसे उस चक्रव्यूह से बाहर निकलना नहीं आता था। वैसे ही हमारे किसानों को नई-नई तरकीब अपना कर एक ऐसे चं व्यूह में फंसाया जा रहा है। डा देवेंद्र शर्मा ने कहा कि ज्यों-ज्यों कीटनाशकों का प्रयोग अधिक होता है, त्यों-त्यों कुदरत कीटों को भी उन कीटनाशकों से बचाव के लिए अधिक ताकत प्रदान कर देती है, जिससे दो-चार वर्ष बाद कीटनाशक बेअसर हो जाते हैं और कंपनिया फिर नए कीटनाशक तैयार करती है। इस प्रकार नए-नए कीटनाशक व बीज तैयार कर कुछ मुनाफाखोर किसानों की जेबों पर डाका डालते हैं। शर्मा ने बताया कि आंध्रप्रदेश के किसानों द्वारा शुरू की गई इस मुहिम में वहां के कुछ एनजीओ भी आगे आए हैं। वहां के एक स्वयं सेवी महिला समूह ने किसानों की इस मुहिम के लिए पांच हजार करोड़ रुपए की राशि एकत्रित की है। उन्होंने कहा कि हमारी कमाई का 40-50 प्रतिशत पैसा तो हमारी बीमारी पर ही खर्च हो जाता है। डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि वर्ष 2009 में गांव निडाना में खेत पाठशाला शुरू की गई थी। तब से लेकर आज तक उनकी पाठशाला के अभूतपूर्व परिणाम सामने आए हैं।

पाठशाला में किसानों को फसलों की देखरेख के बारे में जानकारी देते कृषि विशेषज्ञ।

इन्होंने भी लिया भाग : इस अवसर पर पाठशाला में खाप पंचायत की तरफ से खाप प्रधान इंद्र सिह दुल, खटकड खेडा खाप के प्रधान दलेल, संदीप ढांडा, 84 खाप प्रधान भिवानी से राज सिह घणघस, किसान क्लब के प्रधान फूल सिह श्योकंद, बागवानी विभाग से डीएचओ डा बलजीत सिह राणा आदि ने भी शिरकत की।